पद ११८ (राग: पिलु - ताल: दादरा)

भ्रांती तुटे।।३।।

भ्रांति रात्रंदिन वाटे।।२।। माणिक म्हणे रघुवीर दर्शनाविण। कैसी

कोदंडधारी राम सखे मज पहावा वाटे।।धु.।। नेत्रीं वाहे

प्रेमांबुधारा। सद्भदित कंठ दाटे।।१।। लागोनि ध्यास पडली मज।